jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:46 PM Page 16

डीआरआई, दिल्ली में तत्कालीन सरसंघचालक बालासाहब देवरस

घुड़सवारों का भी योगदान रहा। शौर्य का यह दृश्य स्वयंसेवकों और ग्राम-नगरवासियों के मन पर छा गया। 1944 में नारायणी नदी का प्रकोप छितौली गांव पर टूटा। नानाजी स्वयंसेवकों को लेकर उस गांव के सहायतार्थ दौड़ पड़े। सैकड़ों बोरी खाद्य-पदार्थ वहां पहुंचा दिए। बाबा राघवदास की टोली स्वयंसेवकों की यह तत्परता और सेवावृत्ति देख चमत्कृत रह गई। नानाजी का कार्यक्षेत्र बढ़ता जा रहा था। गोरखपुर नगर से जिला, देवरिया और बस्ती, आजमगढ़ तथा बलिया जिलों तक विस्तार हो गया। पूरे क्षेत्र में शाखाओं का जाल बिछ गया। 1942 तक 250 शाखाएं खुल गईं। 1946 तक पूरा क्षेत्र संघ-शाखाओं से पट गया। उन दिनों पूर्वी उत्तर प्रदेश में बाल-विवाह होता था। अतः नानाजी ने पहली बार उदयवीर सिंह जैसे विवाहित युवकों को प्रचारक निकाला। नानाजी की प्रेरणा से योगेन्द्र जी, हरीश श्रीवास्तव, सुधीर जी जैसे अनेक क्षमतावान प्रचारकों की श्रृंखला खड़ी हुई। उन दिनों संघ-कार्य की दृष्टि से नानाजी का क्षेत्र उत्तर प्रदेश में सबसे आगे माना जाता था। गोरखपुर में मारवाड़ी व्यापारियों की बड़ी बस्ती थी, नानाजी उन्हें संघ में खींच लाए। बालाप्रसाद तुलस्यान, मुरलीधर तुलस्यान, मदन जालान, देवी प्रसाद अग्रवाल जैसे श्रेष्ठ कार्यकर्ता मिले। पूरे प्रांत में नानाजी के कर्तृत्व की चर्चा होती थी। उस कालखंड पर एक बड़ा ग्रंथ लिखा जा सकता है।

1942 से उत्तर प्रदेश में संघ शिक्षा वर्ग का लगना आरंभ हुआ। पहला वर्ग लखनऊ में लगा। 1943 से काशी में लगने लगा। प्रारंभ से ही नानाजी को शिक्षा-वर्ग की व्यवस्था का भार दे दिया गया। 1945 में काशी के शिक्षा-वर्ग पर ब्रिटिश सरकार की कोप दृष्टि पड़ी। उसे बीच में ही स्थगित करना पड़ा। उन्हीं दिनों नानाजी के बड़े भाई आवाजी अपनी पत्नी के देहांत से शोक-विह्वल होकर नानाजी को लेने काशी पहुंचे। नानाजी ने वर्ग छोड़कर जाने से मनाकर दिया। आवाजी रोते-बिलखते वापस लौटे। कुछ ही दिनों बाद 29 अप्रैल को उनके इकलौते पुत्र के निधन का तार पहुंचा। भाऊराव जी ने नानाजी को कडोली होते हुए 5 मई को नागपुर में आरंभ होने वाले वर्ग में तृतीय वर्ष का शिक्षण पूरा करने को कहा। उन दिनों कडोली की यात्रा बहुत समय लेती थी। नानाजी वहां 3 मई की रात में 8 बजे पहुंचे, पर नागपुर समय पर पहुंचने के लिए अगली प्रातः 4 बजे पैदल ही कडोली से 6 मील पर स्थित वाशिम के लिए रवाना हो गए ताकि बस से समय पर नागपुर पहुंच सकें। शोक-विह्वल

तब के जनसंघ के नेताओं दीनदयालजी, सुंदर सिंह भंडारी, कुशाभाउ ठाकरे, व जगदीश प्रसाद माथुर के साथ

परिवारजन एवं ग्रामवासी उनकी इस कठोर संघ-निष्ठा को देखकर कहने लगे कि उनका दिल पत्थर का बना लगता है। पर नानाजी का अतिसंवेदनशील अंतःकरण ध्येयनिष्ठा एवं अनुशासन-भाव से बंधा था। 1945 में तृतीय वर्ष शिक्षण पूरा कर वे पुनः गोरखपुर विभाग में संघ-कार्य में जुट गए। 1946 में उनके क्षेत्र में शाखाओं की संख्या 600 पार कर गई थी।

कार्य तेजी से बढ़ रहा था कि 30 जनवरी 1948 को गांधी जी की हत्या का दुर्भाग्य घटित हुआ। पं. नेहरू ने उसे बहाना बनाकर 4 फरवरी को संघ पर प्रतिबंध थोप दिया। देश भर में हजारों-हजार स्वयंसेवक अकारण ही गिरफ्तार कर लिए गए। गोरखपुर में नानाजी को भी गिरफ्तार किया गया। उन पर आरोप लगाया गया कि उन्होंने महंत दिग्विजयनाथ जी से गांडसे की भेंट कराई, उसे पिस्तौल दिलवाई। पहले 15 दिन उन्हें डाकुओं और खूनियों के साथ 'कन्डेम्ड सेल' में रखा गया। चार महीने अकेले सेल में बंद रखा। वहां उनके साथ नेशनल गार्ड के नेता मोइनुद्दीन को भी रखा गया। उससे नानाजी की गहरी दोस्ती हो गई। कांग्रेस नेता रफी अहमद किदवई उसके सहपाठी रहे थे। वे उनसे भेंट करने जेल आए। उन्होंने नानाजी का किदवई साहब से परिचय कराया। किदवई साहब के यहां से दोनों के लिए भोजन आता। जेल से छूटने पर नानाजी रफी अहमद किदवई को धन्यवाद देने गए। उनके साथ संबंध बनाए रखा।

6 महीने बाद जेल से बाहर आने पर नानाजी को 'राष्ट्रधर्म' प्रकाशन की व्यवस्था संभालने के लिए दीनदयाल जी के पास लखनऊ भेज दिया गया। दीनदयाल जी के मार्गदर्शन में 'राष्ट्रधर्म' प्रकाशन की स्थापना 1947 में हुई थी। 1947 की रक्षाबंधन पर अटल जी और राजीवलोचन अग्निहोत्री के संयुक्त संपादकत्व में 'राष्ट्रधर्म' मासिक का प्रकाशन शुरू हुआ। जनवरी 1948 की मकर संक्रान्ति पर अटल जी के संपादकत्व में 'पांचजन्य' साप्ताहिक निकला। 4 फरवरी 1948 को संघ पर प्रतिबंध लगने के बाद नानाजी के लखनऊ आने के पहले दोनों पत्रिकाओं पर भी प्रतिबंध लग चुका था। 9 दिसंबर 1948 में सत्याग्रह शुरू होने के पूर्व 'स्वदेश दैनिक' आरंभ हुआ। किन्तु 6-7 दिन बाद ही पुलिस ने छापा मार कर कार्यालय सील कर दिया। प्रेस की तालाबंदी होते ही पहले से आर्डर की हुई एक मशीन की बिल्टी आ गई। नानाजी के लिए प्रकाशन का क्षेत्र बिल्कुल नया था। किन्तु उनकी योजक बुद्धि किसी भी नई चीज को तुरंत सीख लेती थी। कठिनाइयों का रास्ता